2025
26 मई - 08 जून
www.mukhiyajee.com
बिहार
पटना
वर्ष : 02 | अंक :59-60

# मुखियाजी

कुल 10 पेज
EVENING E-PAPER by APP World Media

जल्द आ रहा है
Radio Mukhiyajee

*कउनो खुल के खेलत बा, त कउनो चुप्पी मार के बइठल बा। ई सियासी हमाम में सब वही के वही बा। भाजपा, जदयू, राजद, कांग्रेस, AIMIM, रालोमो, रालोजपा, विपक्ष अउर अब जनसुराज भी... लगभग सभे पार्टी में एह विचारधारा के लोग बा।*

# ना जीतब ना जीते देब

**Rajesh Thakur @ Patna**

न खायब, न खाय देब... न जीतब, न जीते देब... भोजपुरी की इस कहावत को इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव में अभी से कुछ नेताजी और कुछ राजनीतिक पार्टियां चरितार्थ करने में जुट गयी हैं। पहले थोड़ा भोजपुरियन का स्वाद लेते हैं। बिहार के सियासी रण मतलब बिहार के लड़ईया के शुरू होखे में अब बामुश्किल चार - साढ़े चार महीना बाकी बा। कबहु चुनाव आयोग के नोटिफिकेशन आ जाला। वक्त के पहिया तेजी से भाग रहल बा। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के लिहाज से पार्टी से ले के नेताजी तक अपन-अपन गोटी सेट करे में जुट गइल बा। साथ-साथ अभी से 'ना जीतब, ना जीते देब' के महामंत्र प काम चालू हो गइल बा। कउनो खुल के खेलत बा, त कउनो चुप्पी मार के बइठल बा। ई सियासी हमाम में सब वही के वही बा। भाजपा, जदयू, राजद, कांग्रेस, AIMIM, रालोमो, रालोजपा, विपक्ष अउर अब जनसुराज भी... लगभग सभे पार्टी में एह विचारधारा के लोग बा। देखल जाव त कउनो-कउनो पार्टी त बस यहील मैदान में उतरत बा कि 'हम त डूबब सनम, तोहरा के भी ले डूबब...' के चरितार्थ कर सके। मतलब ना जीतब, ना तोहरा जीते देब... न खायब, न खाय देब...!!!

**(शेष खबर पढ़ें पेज 4 पर)**

बिहार की लड़ईया 2025

PAGE 04

PAGE 05

PAGE 06

PAGE 07

PAGE 09

PAGE 10

2025
26 मई - 08 जून
www.mukhiyajee.com
बिहार
पटना
वर्ष : 02 | अंक :59-60

# मुखिया जी

EVENING E-PAPER by APP World Media

कम दर पर विज्ञापन के
लिए हमसे संपर्क करें
9507777222, 9507777555

PARTH LIBRARY

Under Guidence of : Dr. Shivendu Alok (G.S GURU)

Our Features:

- 24x7 Study Environment.
- Positive & Peaceful Environment of Self Study.
- Comfortable Furniture for Long Hours Study.
- Wi-Fi Facility with High Speed.
- Fully Air Conditioned.
- CCTV Surveillance.
- Mineral Water.
- Locker Facility
- Power Backup & Charging Point
- Important Magazines & NewsPapers
- Reserved Seat for Girls

24/7 WiFi

Admission Open

Special Feature :

Free

Weekly Current Affairs Test
& Discussion

Dr. Shivendu Alok
(G.S. GURU)

Add: 2nd Floor, Parth Civil Services,
धरहरा कोठी, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के पीछे, नया टोला, पटना-4

9852550786
8083237786

Print & Design By - UTTAM GLOW SIGN, PATNA #9852559968

2025
26 मई - 08 जून
www.mukhiyajee.com
बिहार
पटना
वर्ष : 02 | अंक :59-60

# मुखियाजी

EVENING E-PAPER by APP World Media

इस QR Code पर
भेजें सहयोग राशि

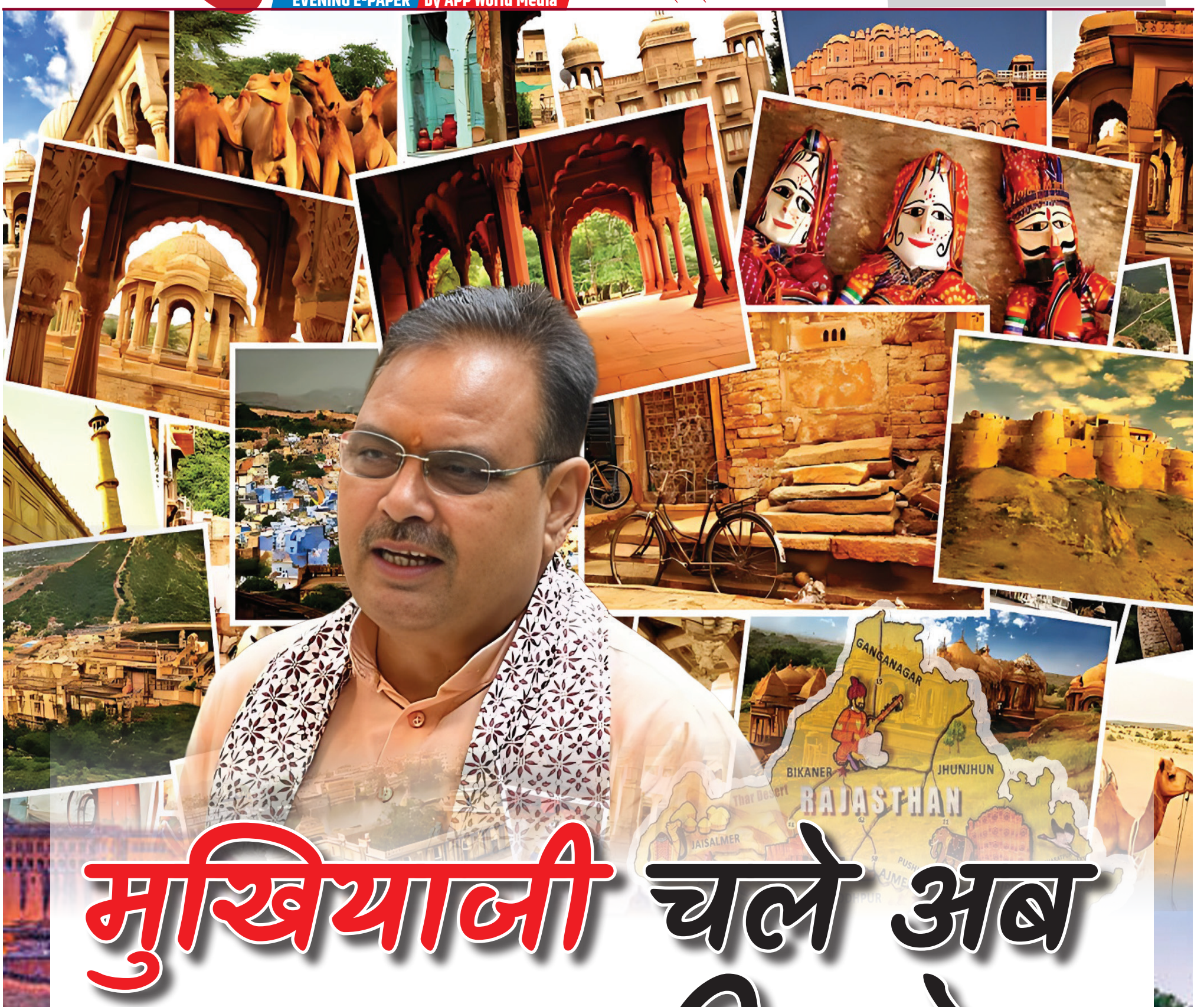


# मुखियाजी चले अब राजस्थान की ओर

झारखंड और उत्तर प्रदेश के साथ ही मुखियाजी के कदम अब राजस्थान की ओर बढ़ने को बेताब है। रेत के सुनहरे समंदर और रंग-बिरंगी संस्कृति का अनुपम संगम, जहां शौर्य और आतिथ्य की गाथाएं हवा में गूंजती हैं। इस रेगिस्तानी प्रदेश की माटी में इतिहास के पन्ने बिखरे हैं, जहां किले, महल और लोककथाएं हर कदम पर गर्व से सिर उठाए खड़े हैं। यहां की सियासत भी उतनी ही रोचक है, जितनी इसकी थार की रेतीली चादर। राजस्थान की राजनीति में राजशाही की छाप और आधुनिक लोकतंत्र का मेल देखने को मिलता है, तो पंचायती राज यहां की ग्रामीण आत्मा का आधार है, जहां गाँवों की चौपालों पर लोकतंत्र जीवंत होता है। इस रंगीले राजस्थान की वर्तमान से इतिहास तक की गाथाओं को अब मुखियाजी भी सुनाएगा : संपादक

## अपनी बात

मुखियाजी। बिहार-झारखंड में मुखिया। यूपी-एमपी में ग्राम प्रधान। राजस्थान-हरियाणा में सरपंच। दरअसल, मुखियाजी व्यापक शब्द है। यह केवल पद नहीं है। जवाबदेही का बोध कराता है। पंच में परमेश्वर का विश्वास दिलाता है। ग्राम पंचायत की बात हो। सरकारी व गैरसरकारी संस्था का उद्धरण हो। पार्टी-पॉलिटिक्स का गलियारा हो। देश हो या राज्य अथवा घर हो या कोई संस्था, सबका हेड खुद में मुखिया है। पंचायतों में घोषित पद है तो बाकी जगहों पर अघोषित। जिनका बड़े अखबारों में नहीं छपता है, उनके लिए भी यह अपना मंच है और उनके लिए भी, जिनका बिना विज्ञापन का कहीं नहीं प्रकाशित होता है। आप सब अपनी गतिविधियों को यहां शेयर करें। हम आपकी गतिविधियों को यहां प्रकाशित करेंगे। साथ ही मुखियाजी डॉट कॉम पर भी जगह देंगे।

राजस्थान की खबर और विज्ञापन के लिए संपर्क करें : अनिल कुमार सिंह, राजस्थान प्रभारी : संपर्क : 9829674772

Contact us: mukhiyajeebihar@gmail.com : Mobile : 9507777222 / 9507777555

# रंग दिखाने को तैयार हैं नेताजी

**Rajesh Thakur @ Patna**

बिहार में इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी गरमाहट बढ़ने लगी है। मौसम को भी अब गरमाहट फेल करने लगी है। यह अलग बात है कि जब वोटिंग होगी तो मौसम जाड़े का आ जाएगा। ऐसे में 'बिहार की लड़ईया @ 2025' को लेकर नेताजी रंग दिखाने लगे हैं। अभी तक तो जनसुराज पार्टी के सुप्रीमो प्रशांत किशोर रणनीति के तहत चुनाव मैदान में उतरे थे। उन्हीं की यह 'देन' थी कि नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री रहते हुए उनकी पार्टी जदयू को 243 में से महज 43 सीटें आयी थीं। वहीं पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा, पूर्व केंद्रीय मंत्री आरके सिंह, भाजपा के वरीय नेता मिथिलेश तिवारी भी 'न जीतब, न जीते देब' वाली पॉलिटिक्स के शिकार हो गए। हाल ही में विधानसभा की चार सीटों पर हुए चुनाव है। इसी तरह, 2024 के लोकसभा चुनाव में हारे हुए उपेंद्र कुशवाहा भी साफ कह रहे हैं कि इस बार इन सारी स्थितियों को ध्यान में रखकर तैयारी की जा रही है। वे ये भी साफ कहते हैं कि जब एक ही नाव पर सब सवार हैं तो सिर्फ उपेंद्र कुशवाहा क्यों अकेले डूबेगा। हम डूबेंगे तो सब डूबेंगे।

बहरहाल, लोगों को उम्मीद है कि सितंबर के दूसरे पखवारे में चुनाव आयोग अधिसूचना जारी कर दे। इसे देखते हुए बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर तमाम पार्टियों से लेकर नेताजी तक अपनी-अपनी गोटी सेट करने में लग गये हैं। वहीं अंदर ही अंदर अभी से 'ना जीतेंगे और न जीते देंगे' के 'महामंत्र' को अमलीजामा पहनाने में जुट गये हैं। सियासी पंडितों के अनुसार, कुछ पार्टियां तो इसीलिए चुनाव मैदान में आ रही हैं कि 'हम तो डूबेंगे सनम, तुमको भी ले डूबेंगे' को वे चरितार्थ कर सके। कहें तो इस सियासी जंग में एनडीए

हाल ही में विधानसभा की चार सीटों पर हुए चुनाव में जनसुराज पार्टी की सेंधमारी की वजह से राजद बुरी तरह पराजित हो गया। उसकी जीती हुई सीटें भी हाथ से निकल गयीं। जून का माह शुरू हो गया है।

**जदयू फिर रणनीति का होगा शिकार?**

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल (यू) क्या अंतिम सांस गिन रहा है? वह किसी साजिश का शिकार हो रहा है ? 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव वाली स्थिति तो फिर नहीं हो जाएगी ये कई ऐसे सवाल हैं, जिनसे पार्टी के अंदर और बाहर के लोग जूझ रहे हैं। सियासी पंडितों की मानें तो पिछले विस चुनाव में चिराग पासवान ने 40 से अधिक सीटों पर जदयू को नुकसान पहुंचाया था, वह भी कहकर। इस बार चिराग फिर से नया 'सियासी पैंतरा' चल रहे हैं। कुशवाहा भी अलग टेंशन दें रहे हैं। ऐसे में पहले जदयू महागठबंधन के अलावा प्रशांत किशोर से बचने की रणनीति बना रहा था। लेकिन नए बवंडर से जदयू को फूंक-फूंक कर कदम बढ़ाना होगा। उसे विरोधियों से ज्यादा अपनों से खतरा है। फिर उसे कहते देर नहीं लगेगी कि मुझे तो अपनों ने लूटा।

यानी सियासत के PK ही केवल रंग दिखा रहे थे, लेकिन अब तो लोजपा-आर के सर्वेसर्वा चिराग पासवान और रालोमो के संस्थापक उपेंद्र कुशवाहा भी अपना राजनीतिक रंग दिखाने लगे हैं।

2020 का बिहार विधानसभा चुनाव तो आपको याद ही होगा। तब रामविलास पासवान वाली पार्टी लोजपा थी। हालांकि चुनाव के जस्ट पहले रामविलास जी गुजर गए थे। पार्टी को उनके पुत्र चिराग पासवान ने अपने हाथों में लेकर एक खास में जनसुराज पार्टी की सेंधमारी की वजह से राजद बुरी तरह पराजित हो गया। उसकी जीती हुई सीटें भी हाथ से निकल गयीं। जून का माह शुरू हो गया है। चुनाव अक्टूबर-नवंबर में होंगे। लेकिन, एक बार फिर चिराग पासवान और उपेंद्र कुशवाहा अपना 'रंग' दिखाने लगे हैं। चिराग की 8 जून को आरा में नवसंकल्प महासभा होनी है। इसे लेकर सियासी पंडितों से ज्यादा जदयू के कान खड़े हो गए हैं। 2020 का जला जदयू 2025 में फूंक-फूंक कर कदम बढ़ा रहा हो या महागठबंधन अथवा छोटे-छोटे दल; सब के सब अपनी-अपनी चाल चल रहे हैं। इसकी परिणति का कड़वा सच यही है कि इस 'खेमेबाजी पॉलिटिक्स' का शिकार कौन हो जाए, इसके लपेटे में कौन दिग्गज फंस जाए कहना मुश्किल है। अब कौन नेताजी उबरेंगे, कौन फंसेंगे, यह तो वक्त बताएगा, लेकिन चुनावी माहौल से जो संकेत मिल रहे हैं, उससे साफ है कि कुछ नेताजी 'ना जीतब, ना जीते देब' की चाल चलने को टाइट रणनीति बनाने में जुट गये हैं।

**एक्सपर्ट व्यू**
**अनंत, पटना**

*सत्ता की राह जब तेजस्वी के लिए आसान नहीं है तो चिराग के लिए यह दिवास्वप्न दूर की कौड़ी है। भाजपा जब स्वयं अपना मुख्यमंत्री नहीं बना सकी तो इन्हें मूर्ख तो बना ही सकती है। चिराग की पहचान पासवान और सवर्ण जातियों के कुछ वर्चस्ववादी बाहुबलियों के समर्थक तक सीमित है। धन के बल पर दिखाए जा रहे सर्वेक्षण से इतर यही जमीनी सच्चाई है। इनकी पार्टी लोजपा की छवि बिहार में बहुत अच्छी नहीं रही है। रामविलास पासवान ने ही ऐसे ऐसे लोगो को चुन-चुन कर टिकट दिया कि इसकी गिनती लोफर जमात पार्टी के रूप में होने लगी। चिराग उसमें कोई सुधार नहीं किए, बल्कि उसी राह पर चले।*

## ओवैसी से आखिर कैसे बचेगा राजद ?

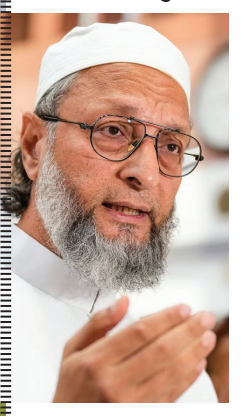

AIMIM के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी एक बार फिर एक्टिव हो गये हैं। 2020 के बिहार विस चुनाव में ये सीमांचल में कुछ अधिक 'सक्रियता' नहीं दिखाते तो शायद बिहार में तेजस्वी यादव की सरकार बन जाती। उस चुनाव में AIMIM को 5 सीटों पर सफलता मिली थी। हालांकि, इनमें से 4 विधायक RJD में शामिल हो गये थे। गोपालगंज में भी AIMIM की वजह से RJD हार गया था। इन सबसे खार खाये ओवैसी ने 2025 में और भी अधिक जोर-शोर से लड़ने की बात कही है। बेशक, ऐसे में तेजस्वी को इस बार पूरी तरह सतर्क रहना पड़ेगा। उन्हें न केवल ओवैसी की रणनीतियों की काट निकालनी पड़ेगी, बल्कि इस तरह के वोटों के लीकेज को भी रोकना पड़ेगा। सियासी पंडितों की मानें तो नेताओं में महत्वाकांक्षा इतना अधिक है कि उन्हें सिर्फ अपना स्वार्थ दिखता है।

## चिराग को कौन बुला रहा बिहार ?

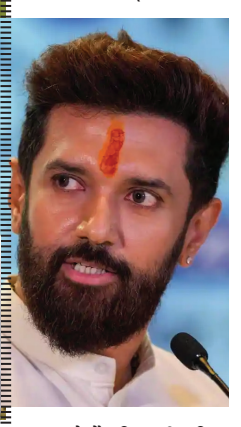

2020 के लोकसभा चुनाव में आपने देखा होगा कि किस तरह चिराग पासवान ने चुनाव लड़के जदयू को एक हद तक पानी पिला दिया था। वो तो नीतीश कुमार की अपनी रणनीति थी कि उनकी कुर्सी के साथ ही सियासी इज्जत भी बच गयी थी और वे नौवीं बार सीएम बन गये। अब एक बार फिर चिराग विधानसभा चुनाव को लेकर एक्टिव हो गये हैं। वे लगातार कह रहे हैं कि उनके लिए बिहार और बिहारी फर्स्ट हैं। इतना ही नहीं, इस बार वे बिहार में जेनरल सीट से चुनाव लड़ने की बात कह रहे हैं। बता दें कि लोकसभा चुनाव में चिराग की पार्टी लोजपा-आर की स्ट्राइक रेट 100% थी। इससे उत्साहित होकर बिहार में 'सियासी धमाल' मचाना चाहते हैं। सियासी पंडित भी बताने में असमर्थ हैं कि चिराग पासवान को बिहार बुला रहा है या उन्हें कोई भेज रहा है !

## 'उपेंद्र कुशवाहा अकेले नहीं डूबेगा'

रालोमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा इस चुनाव में क्या करेंगे, अभी से नहीं कहा जा सकता है। भाजपा ने उन्हें राज्यसभा भेजकर काराकाट लोकसभा क्षेत्र में मिली हार का डैमेज कंट्रोल करने की कोशिश तो की, लेकिन कुशवाहा अब तक भाजपा के रंग में रच-बस नहीं पाए हैं। उन्होंने कई बार बिना नाम लिये आरोप लगाया है कि भाजपा के कुछ नेताओं के कारण उन्हें हार का सामना करना पड़ा। और अब, एक बार फिर से उन्होंने भाजपा को खुलकर धमकी दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बिक्रमगंज सभा के ठीक पहले का एक वीडियो इधर वायरल हुआ है। इसमें कुशवाहा भाषण देते हुए पूरे एनडीए को ही खरी-खोटी सुना रहे हैं। वे साफ-साफ कह रहे हैं कि एनडीए में हमलोग सब एक ही नाव पर सवार हैं तो फिर केवल कुशवाहा ही क्यों डूबेगा। यदि हम डूबेंगे तो आप भी डूबेंगे।

## खुदरिया नेताओं की भी लंबी फौज

चुनाव में केवल पार्टी स्तर पर ही वोट काटने की बीमारी नहीं है। यह बीमारी नेताओं के व्यक्तिगत स्तर पर भी है। खास बात कि इस बीमारी से हर राजनीतिक दल ग्रस्त है।

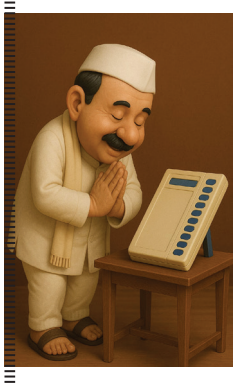

लोकसभा चुनाव 2024 में आपने देखा होगा कि उपेंद्र कुशवाहा किस कदर NDA में रहते हुए काराकाट से हार गये थे। पवन सिंह वहां से खड़ा होकर उनका खेल बिगाड़ दिए थे। इसका उस बेल्ट में ऐसा बुरा प्रभाव पड़ा कि आरा से दो बार से लगातार सांसद रहने वाले आरके हार गये। इसी तरह, एक निर्दलीय उम्मीदवार पूर्व IPS आनंद मिश्रा की वजह से बक्सर से बीजेपी उम्मीदवार मिथिलेश तिवारी को हार का सामना करना पड़ा। ये सब उम्मीदवार न खुद जीते और न ही मेन स्ट्रीम वालों को जीतने दिए। ऐसे नेता अभी से विस चुनाव को लेकर मूंछ पिजा रहे हैं। इनकी चपेट में कौन आ जाए नहीं कहा जा सकता है।

## पटना जंक्शन के निकट बने अंडरग्राउंड रोड देखकर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की खूब प्रशंसा कर रहे हैं लोग

# वाह चाचा वाह

**Mukhiyajee @ Patna**

चुनावी साल में बिहार को बड़ी-बड़ी सौगात मिलने वाली है। इसी साल पटना में मेट्रो भी शुरू होने वाला है। इसके पहले पटना जंक्शन के निकट भूमिगत पथ (सब-वे) जनता के लिए बिहार सरकार की ओर से खोल दिया गया। 17 मई को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसका लोकार्पण किया। बिहार का यह पहला अंडरग्राउंड सब-वे) है। इसके उद्घाटन समारोह में उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, मंत्री विजय चौधरी, मंत्री जीवेश कुमार सहित सांसद, विधायक, विधान पार्षद सहित अन्य अधिकारी शामिल हुए। पटना जंक्शन और महावीर मंदिर के बीच बने यह सब-वे लोगों के लिए वर्तमान में पिकनिक स्पॉट और सेल्फी पॉइंट बन गया है। बड़े से बड़े और छोटे से छोटे लोग इसे देखने के लिए पहुंच रहे हैं। खासकर युवा वर्ग इसकी प्रशंसा करते थक नहीं रहे हैं। साथ में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की भी खूब प्रशंसा कर रहे हैं।

वे सब तो यह भी कह रहे हैं, 'पटना में भूमिगत पथ बनाकर चाचा (नीतीश कुमार) ने तो बिहार में इतिहास ही रच दिया। वाह चाचा वाह, आपने ने तो कमाल कर दिया'। वे लोग न केवल सेल्फी फोटो और वीडियो बना रहे हैं, बल्कि रील से लेकर मीम तक बना रहे हैं और इंस्टाग्राम पर अपलोड कर रहे हैं। फेसबुक पर भी लगा रहे हैं, लेकिन युवाओं की पहली पसंद इंस्टाग्राम ही है। यह अलग बात है कि विरोधी इसमें में खामी ही खोज रहे हैं।

### ट्रैवेलेटर के क्या कहने

पटना या बिहार के किसी जिले में अब तक आपने एस्केलेटर देखा होगा। यह बड़े-बड़े मॉल में देखने को मिलता है और कुछ बड़े रेलवे स्टेशनों पर भी इसकी सुविधा दी गयी है। पहली बार किसी शहर में ट्रैवेलेटर को लगाया गया है। यह सौभाग्य पटना को प्राप्त हुआ है। इसमें किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं रहे, इसलिए लोकार्पण के दिन मुख्यमंत्री ने ट्रैवेलेटर, एस्केलेटर आदि का खुद जायजा लिया। यात्री सुविधाओं व कनेक्टिविटी के संबंध में अधिकारियों से पुष्ट जानकारी ली।

### मुख्यमंत्री बोले

उद्घाटन के पश्चात् मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि इसके शुरू होने से पटना जंक्शन और आसपास के इलाकों में भीड़भाड़ कम होगी। सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था सुदृढ़ होगी। जीपीओ गोलंबर के नजदीक मल्टीलेवल हब को जंक्शन से जोड़ने हेतु भूमिगत पैदल यात्री मार्ग का निर्माण कराया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य पटना जंक्शन रेलवे स्टेशन परिक्षेत्र में यातायात व्यवस्था को विकसित करना है।

### मुख्य बातें

- नगर विकास विभाग की ओर से कराया गया है इस सब-वे का निर्माण।
- 84.83 करोड़ रुपये की आयी है लागत तथा इसकी लंबाई है 440 मीटर।
- 66.81 करोड़ की लागत से इसके निकट बना है मल्टी मॉडल हब भी।
- सब-वे में 3 ट्रैवेलेटर, 2 एस्केलेटर भी लगाए गए हैं। एयरकंडीशनिंग की भी सुविधा
- भविष्य में इस पथ को पटना मेट्रो स्टेशन से भी जोड़ने की योजना।

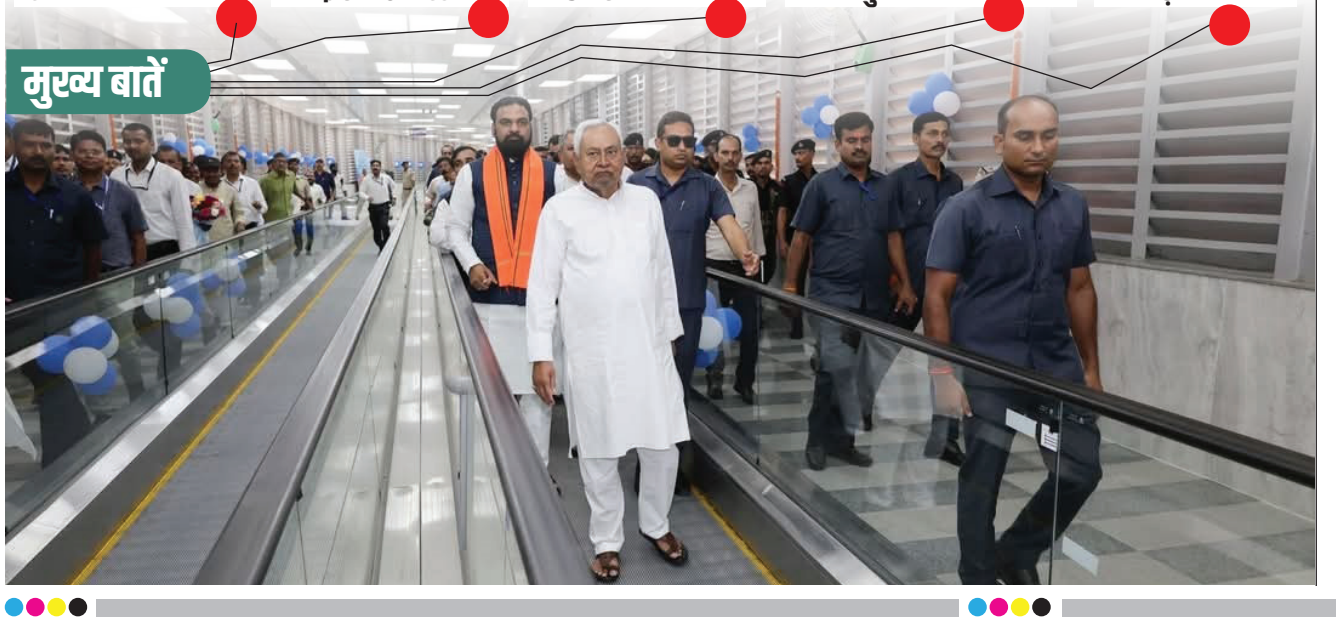

## सियासी गलियारा

**घेराव**

पटना में 4 जून को कांग्रेस की ओर से बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय के सरकारी आवास का घेराव किया गया और उनके इस्तीफे की मांग की गयी। पिछले दिनों कुढ़नी (मुजफ्फरपुर) की रेप पीड़िता दलित बच्ची की पीएमसीएच में इलाज के आभाव में मौत हो गयी थी। इसी के विरोध में घेराव करते हुए नेताओं व कार्यकर्ताओं ने मंत्री के पोस्टर में कालिख भी पोती।

**उद्घाटन**

तारापुर के जदयू विधायक राजीव कुमार सिंह ने इसी सप्ताह बनहारा पंचायत अंतर्गत ग्राम बंशीपुर में खेल मैदान का फीता काट कर उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि यह खेल मैदान न केवल विद्यार्थियों को शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा, बल्कि उन्हें खेलों में आगे बढ़ने का अवसर भी प्रदान करेगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में खेल के क्षेत्र को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है।

**पुस्तक भेंट**

वरीय पत्रकार उपेंद्र कश्यप ने बिहार के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को अपनी लिखित पुस्तक 'आँचलिक पत्रकारिता की दुनिया' भेंट की। राजभवन में 4 जून को एक शिष्टाचार मुलाकात के दौरान उनके साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ संजय पासवान सहित अन्य लोग मौजूद रहे। लेखक ने मुखियाजी डॉट कॉम को बताया कि यह पुस्तक अनुभव का दस्तावेज है।

सियासी लड़ाई, अब जमीन पर आयी
किसे मिलेगी जीत, किसे मिलेगी खाई

खूब होगी भई उठापटक, कौन फिनिश
चल रहा है 25, चुनाव में सब हैं 'बीस'

मगध से मधुबनी तक
सारण से चंपारण तक

खबरें पढ़कर मजा
न आए तो बोलिएगा

**विस चुनाव 2010**

| | |
|---|---|
| विजेता : | श्याम रजक |
| पार्टी : | राजद |
| वोट मिले : | 62,314 वोट |
| वोटिंग परसेंटेज: | 48.2% |
| उपविजेता : | उपेंद्र रविदास |
| पार्टी : | भाजपा |
| वोट मिले : | 39876 |
| वोटिंग परसेंटेज : | 30.9% |
| कुल मतदाता : | 2.4 लाख |
| वोटिंग प्रतिशत: | 55.9% |

**विस चुनाव 2015**

| | |
|---|---|
| विजेता : | श्याम रजक |
| पार्टी : | जदयू (महागठबंधन) |
| वोट मिले : | 75829 |
| वोटिंग परसेंटेज : | 47.6% |
| उपविजेता : | राजेश्वर रजक |
| पार्टी : | भाजपा |
| वोट मिले : | 54392 |
| वोटिंग परसेंटेज : | 34.1% |
| कुल मतदाता : | 2.7 लाख |
| वोटिंग प्रतिशत : | 57.4% |

**विस चुनाव 2020**

| | |
|---|---|
| विजेता : | गोपाल रविदास |
| पार्टी : | सीपीआई-माले |
| वोट मिले : | 91124 |
| वोटिंग परसेंटेज : | 45.8% |
| उपविजेता : | अरुण मांझी |
| पार्टी : | जदयू (एनडीए) |
| वोट मिले : | 77267 |
| वोटिंग परसेंटेज : | 35.2% |
| कुल मतदाता : | 3.0 लाख |
| वोटिंग प्रतिशत : | 54.3% |

**2025 के संभावित आंकड़े** कुल वोटर्स : 3.2 लाख पुरुष वोटर्स : 51% महिला वोटर्स : 49%

# किसका खिलेगा सियासी फूल

**Rajesh / Ajeet @ Patna**

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर माहौल बनने लगा है। सारी राजनीतिक पार्टियां रणनीति बनाने में जुट गयी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर कांग्रेस के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष राहुल गांधी तक का बिहार दौरा बढ़ गया है। पीएम मोदी व राहुल गांधी अब तक तीन-तीन बार बिहार आ चुके हैं। 'मुखियाजी डॉट कॉम' और 'मुखियाजी ईपेपर' पर यहां के चुनावी संग्राम को 'बिहार की लड़ईया @ 2025' के रूप में सीरीज शुरू की जा रही है। इसे आप जल्द ही 'रेडियो मुखियाजी' पर भी सुनेंगे। इसकी पहली कड़ी के रूप में पटना का फुलवारी शरीफ विधानसभा क्षेत्र का सियासी गणित बता रहे हैं। साथ ही, किस तरह का माहौल बन रहा है, उसे भी बताएंगे।

फुलवारीशरीफ विधानसभा क्षेत्र (188) पटना जिले का एक महत्वपूर्ण शहरी-ग्रामीण मिश्रित सीट है। यह सीट अनुसूचित जाति (SC) के लिए आरक्षित है और अपनी सियासी गतिशीलता के लिए जाना जाता है। 2020 के चुनाव में यहां से उलटफेर करते हुए सीपीआई-माले के गोपाल रविदास ने बाजी मारी थी। वे महागठबंधन के उम्मीदवार थे। उन्होंने NDA की ओर से JDU प्रत्याशी अरुण मांझी को 13 हजार 857 वोट से पराजित किया था। गोपाल रविदास को 91 हजार 124 तो अरुण मांझी को 77267 वोट आए थे। कुल 26 में से मात्र 11 उम्मीदवार को 1000 से नीचे वोट प्राप्त हुए थे। उनमें से सिर्फ एक उम्मीदवार अर्जुन पासवान को 500 से कम यानी 381 वोट मिले थे। निर्वाचन आयोग के आंकड़े बताते हैं कि 21 उम्मीदवार से अधिक नोटा को वोट मिले थे। 3480 वोटरों ने नोटा का बटन दबाया था।

चुनाव आने में अभी 4 माह से अधिक का समय है। सितंबर में निर्वाचन आयोग की अधिसूचना जारी होने की उम्मीद है। सूत्रों की मानें तो यह सीट महागठबंधन की ओर से एक बार फिर सीपीआई-माले के कोटे में ही जाएगी और सिटिंग विधायक गोपाल रविदास को ही टिकट मिलेगा। वहीं एनडीए की ओर से भी लगभग तय है कि यह सीट जदयू के खाते में जाएगी। चुनावी सिनेरियो लगभग वही रहेगा, दोनों ओर से मुद्दे भी वही रहेंगे। लेकिन, जदयू में टिकट को लेकर मारामारी होने की प्रबल संभावना है। दरअसल, कई टर्म विधायक और मंत्री रहे श्याम रजक जदयू की ओर से इग्नोर किये जाने पर 2020 के चुनाव के पहले राजद में आ गए थे। लेकिन यह सीट वामदल के खाते में चले जाने से उन्हें निराशा ही हाथ लगी। और फिर से वे जदयू में शामिल हो गए हैं, लेकिन सूत्रों की मानें तो यहां भी उनके लिए टिकट की राह आसान नहीं है, अरुण मांझी ज्यादा भारी हैं।

सियासी पंडित भी मानते हैं कि जदयू में भी पूर्व मंत्री श्याम रजक को टिकट मिलने की कोई गारंटी नहीं है। हालांकि, वे टिकट मिलने की उम्मीद से क्षेत्र में लगातार भ्रमण कर रहे हैं। सामाजिक कार्यों में हाथ बंटा रहे हैं। दूसरी ओर, महज 13 हजार वोटों से हारे अरुण मांझी भी लगातार मेहनत कर रहे हैं। हार के बाद भी वे नयी ऊर्जा के साथ क्षेत्र के लोगों से मिलजुल रहे हैं। सामाजिक कार्यों में शामिल हो रहे हैं। जनता के हक के लिए लड़ रहे हैं। वहीं, स्थानीय विधायक गोपाल रविदास भी शुरू से जुझारू प्रवृति के रहे हैं। विधायक बनने के बाद भी लोगों को हक दिलाने के लिए सरकार और प्रशासन के खिलाफ आंदोलन करते रहते हैं। सदन में भी जनता और क्षेत्र के विकास के लिए आवाज उठाते रहे हैं।

बहरहाल महागठबंधन की ओर से बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अपराध, पलायन आदि बड़े मुद्दे होंगे, वहीं एनडीए की ओर से विकास से लेकर नौकरी, कानून का राज सहित स्मार्ट सिटी, मेट्रो आदि देने को अपनी उपलब्धि बताया जाएगा। हां, इस बार प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज भी तेज सियासी धमाके के साथ चुनाव मैदान में आएगी। यह अलग बात है कि उसका परफॉर्मेंस कैसा रहेगा, अभी से नहीं कहा जा सकता है। जनसुराज यदि मुस्लिम को अपना उम्मीदवार बनाता है तो फिर महागठबंधन के लिए टेंशन हो सकता है, लेकिन यदि वह सवर्ण से अपना उम्मीदवार देता है तो फिर एनडीए को सोचना पड़ेगा।

तारापुर विधानसभा क्षेत्र

# कुशवाहा वोटर्स टाइट एकतरफा फिर फाइट

**Rajesh Thakur @ Patna**

मुंगेर जिले के तीन विधानसभा क्षेत्रों में सबसे महत्वपूर्ण सीट है तारापुर। यह सीट इसलिए भी सबों की नजर पर रहती है कि यह बिहार के वर्तमान उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का गृह क्षेत्र है। उनके पिता यहां से सर्वाधिक सात बार विधायक रहे हैं। वे इस क्षेत्र के भीष्म पितामह कहे जाते हैं। हालांकि, उन्होंने 2019 में ही राजनीति से संन्यास ले लिया था, लेकिन वोटरों पर उनकी पकड़ आज भी है। यही वजह थी कि 2021 में हुए उपचुनाव में जदयू और राजद, दोनों उम्मीदवार उनसे आशीर्वाद लेने गए थे। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की मां पार्वती देवी भी यहां से विधायक रही थीं। लगभग ढाई साल पहले उनकी मां का निधन हो गया था। तारापुर से वर्तमान विधायक राजीव कुमार सिंह और इनकी जीत में सम्राट चौधरी की भी अहम भूमिका रही थी। उस समय पंचायती राज मंत्री थे।

तारापुर विधानसभा क्षेत्र में कुशवाहा वोटर्स सबसे अधिक हैंकहा भी जाता है कि यदि यहां का कुशवाहा वोटर्स जिधर 'टाइट' हो जाता है तो दूसरे ओर के प्रत्याशी 'फाइट' से बाहर हो जाता है। दरअसल, तारापुर भी जातीय समीकरण के मामले में अन्य विधानसभा क्षेत्रों से अलग नहीं है। कुशवाहा बेल्ट ही यहां की पहचान है। यह सही है कि 2008 में हुए परिसीमन के बाद खड़गपुर विधानसभा क्षेत्र विलुप्त हो गया। खड़गपुर का ही कुछ इलाका तारापुर में शामिल हो गया, जिससे कुछ जातीय समीकरण में बदलाव आया। इसके बाद भी कुशवाहा वोटों का कोई काट नहीं हो सका।

जून का महीना चल रहा है और सितंबर के अंतिम पखवारे में चुनाव आयोग की अधिसूचना आने की उम्मीद है। अभी की ताजा स्थिति देखी जाए तो जदयू छोड़कर किसी भी सियासी दल में टिकट को लेकर कोई स्पष्ट तस्वीर नहीं है। एनडीए की ओर से जदयू विधायक राजीव सिंह को ही टिकट मिलने की उम्मीद है। वहीं बाकी दलों में तो अभी से कई-कई दावेदार हो गए हैं।

दूसरी ओर, जनसुराज भी लगातार मेहनत कर रही है और उसके संस्थापक प्रशांत किशोर का तारापुर और खड़गपुर दौरा काफी सफल रहा है। वहां से पुराने नेता शुकदेव यादव लगातार क्षेत्र में घूम रहे हैं। नयी पार्टी की घोषणा करने वाले वोलेंट्री रिटायरमेंट लेने वाले आईपीएस शिवदीप लांडे भी हाल में खड़गपुर पहुँचे थे। बताया जाता है कि वे भी अपने दल के लिए राजनीतिक संभावनाओं को भांप रहे हैं।

बहरहाल, तारापुर का सियासी सच यही है कि कुशवाहा यहां जातीय फैक्टर में आगे है और निर्णायक भूमिका में है। यह भी सच है कि यहां हमेशा से उम्मीदवारों की जाति देखकर वोटिंग होती है। साथ ही एक ही जाति से कितने भी प्रत्याशी आ आएं, न तो कुशवाहा वोट बंटता है और न ही MY समीकरण दरकता है। पासवान वोट भी एक पैर पर ही खड़ा रहता है।

## सवर्ण का वोट एनडीए को तय

सवर्ण वोटों का एनडीए में जाना तय है तो MY का वोट महागठबंधन को जाना फाइनल ही रहेगा। कुशवाहा, कुर्मी और धानुक वोट भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओर ही मुख्यातिब रहता है। एनडीए के लिए यह प्लस पॉइंट है कि कुशवाहा समाज से आने वाले सम्राट चौधरी भाजपा के कद्दावर नेता हैं और CM के दौड़ में शामिल हैं। ऐसे में अभी चुनाव पर किसी तरह की कयासबाजी करना जल्दबाजी होगी। हां, जैसे-जैसे चुनाव के दिन नजदीक आएंगे, वैसे-वैसे स्थिति रोमांचक होगी।

## राजद में सर्वाधिक दावेदार तो जदयू में?

सियासी सूत्रों की मानें तो महागठबंधन की ओर से यह सीट राजद को मिलना तय माना जा रहा है। लेकिन यहां दावेदार भी अधिक हो गए हैं। उपचुनाव में राजद ने वैश्य जाति से आने वाले अरुण साह पर दांव लगाया था और इसमें तेजस्वी यादव सफल भी रहे थे। उन्होंने अंतिम राउंड तक जदयू को कड़ी टक्कर दी थी। वैश्य वोटों में टूट भी हुई थी, जिसका सीधा लाभ राजद को मिला था। अरुण साह लगातार क्षेत्र में घूम रहे हैं, वहीं राजद से ही टिकट की उम्मीद लिए जितेंद्र कुमार भी घूम रहे हैं। लेकिन अरुण साह को फिर से टिकट मिलने की ज्यादा उम्मीद है। वैसे तारापुर के पूर्व जिला पार्षद शैलेश कुमार उर्फ मंटू यादव भी वेट एंड वाच की भूमिका में हैं तो पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव अपनी बेटी दिव्या प्रकाश को फिर से राजद से टिकट दिलाने की जुगाड़ में लगे हुए हैं। उधर, जदयू से ही एक पुलिस अधिकारी भी टिकट लेने की जुगत में है। दूसरी ओर, इंजीनियर रोहित चौधरी भी इस बार चुनाव लड़ने के मूड में हैं। वे किस दल से लड़ेंगे, यह क्लियर नहीं है। कहा जाता है कि वे उपचुनाव में ही लड़ने वाले थे, लेकिन स्थानीय मुंगेर सांसद ललन सिंह (वर्तमान केंद्रीय मंत्री) ने उन्हें जदयू में शामिल कराकर मना लिया था। वहीं इन सबसे अलग सिटिंग विधायक राजीव सिंह एनडीए सरकार के विकास योजनाओं को लेकर क्षेत्र में लगातार घूम रहे हैं और नीतीश सरकार की उपलब्धियों को गिना रहे हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

### विस चुनाव 2010

विजेता : नीता चौधरी
पार्टी : जदयू (एनडीए)
वोट मिले : 44582
वोटिंग परसेंटेज : 40%

उपविजेता: शकुनी चौधरी
पार्टी : राष्ट्रीय जनता दल
वोट मिले : 30704
वोटिंग परसेंटेज : 25.77%

कुल मतदाता 2.51 लाख
वोटिंग प्रतिशत 55%

### विस चुनाव 2015

विजेता : मेवालाल चौधरी
पार्टी : जदयू (राजद)
वोट मिले : 66411
वोटिंग परसेंटेज : 43.62%

उपविजेता : शकुनी चौधरी
पार्टी : हम (एनडीए)
वोट मिले : 54464
वोटिंग परसेंटेज : 35.77%

कुल मतदाता 2.89 लाख
वोटिंग प्रतिशत 52.66%

### विस चुनाव 2020

विजेता : मेवालाल चौधरी
पार्टी : जदयू (एनडीए)
वोट मिले : 64468
वोटिंग परसेंटेज : 36.90%

उपविजेता : दिव्या प्रकाश
पार्टी : राजद (महागठबंधन)
वोट मिले : 57243
वोटिंग परसेंटेज : 32.8%

कुल मतदाता 3.17 लाख
वोटिंग प्रतिशत 55.08%

### विस चुनाव 2021

विजेता : राजीव सिंह
पार्टी : जदयू (एनडीए)
वोट मिले : 78966
वोटिंग परसेंटेज : 43%

उपविजेता : अरुण साह
पार्टी : राजद
वोट मिले : 75145
वोटिंग परसेंटेज :

कुल मतदाता 3.18 लाख
वोटिंग प्रतिशत 55%

**2025 के संभावित आंकड़े**
कुल वोटर्स 3.10 लाख
पुरुष वोटर्स 1.68 लाख
महिला वोटर्स 1.42 लाख

# राष्ट्रीय जनता दल

## 11 जून

## सामाजिक न्याय के पुरोधा राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री

# श्री लालू प्रसाद जी

## को 77वें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं

‘ईश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य और लंबी आयु की कामना करता हूं’

**निवेदक**

**शैलेश कुमार उर्फ मंटू यादव, पूर्व जिला पार्षद, तारापुर**
**सह राज्य कार्यकारिणी सदस्य राष्ट्रीय जनता दल, बिहार सह**
**प्रदेश महासचिव अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा**

# लालू@ठेठबिहारी

*राजद सुप्रीमो, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव अगले सप्ताह 77 साल के हो जाएंगे। 11 जून को उनका जन्मदिन है। हालांकि, अब वे पहले की तरह स्वस्थ नहीं हैं। उम्र की वजह से तबीयत खराब होते रहती है। लेकिन एक समय था, जब उनके बिना बिहार ही नहीं, पूरे देश का सियासी जगत अधूरा था। मीडिया में वे छाए रहते थे। दरअसल, लालू यादव आज भी अपने ठेठ बिहारी अंदाज के लिए लोगों के बीच जाने जाते हैं। समर्थक उन्हें आज भी भगवान मानते हैं। उनकी हाजिर जवाबी के कायल तो विरोधी में रहते थे। वे जो महसूस करते थे, वह मुंह पर ही बोल देते थे। आज भी यदि वे पूरी तरह स्वस्थ रहते तो किसी को जवाब देने से नहीं चूकते। ऐसे में हम इस जन्मदिन पर आपको लालू यादव के 5 ठेठ बिहारी अंदाज के किस्से बताते हैं...*

**Rajesh Thakur@Mukhiyajee**

## याद है न नरेंद्र मोदी की मिमिक्री

लालू यादव भले ही अब पहले की तरह नहीं बोल पाते हैं। उम्र की वजह से तबीयत साथ नहीं देती है। किडनी ट्रांसप्लांट के चलते हुए परहेज से भी रहते हैं। जेल में रहने की वजह से 2020 के विधानसभा चुनाव में प्रचार नहीं कर पाए थे। अब तबीयत खराब रहने की वजह से 2025 में भी शायद ही चुनाव प्रचार में जा पाएं। लेकिन, 2015 के चुनाव में उन्होंने खुलकर प्रचार किया था। उनके ठेठ बिहारी अंदाज आज भी लोगों को याद है। उनके गंवई अंदाज के युवा पीढ़ी भी कायल है। उनके ठेठ बिहारी अंदाज की काट विरोधियों के पास भी नहीं होता है। 2015 के चुनाव प्रचार में तो लालू ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मिमिक्री कर लोगों को खूब हंसाया था। उस दौरान लालू का मिमिक्री वाला वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ था। दरअसल, 2015 के चुनाव को आप नहीं भूले होंगे। तब नीतीश कुमार महागठबंधन का हिस्सा थे। उसी महागठबंधन में लालू यादव भी थे। बीजेपी अलग चुनाव लड़ रही थी। इसी दौरान चुनाव प्रचार में पीएम मोदी ने बिहार के लिए आर्थिक पैकेज की घोषणा की थी। इस पर पटना में आयोजित एक सभा में लालू ने पीएम मोदी की मिमिक्री करते हुए गजब का जवाब दिया था। लालू ने पीएम के अंदाज में मुंह बनाते हुए कहा, 'क्या बोले थे मोदी, भाइयों- बहनों, भाइयों- बहनों.. बिजली आई... बिजली मिली, अरे मोदीजी ठीक से बोलो नहीं तो गले का नस फट जाएगा।' आगे लालू ने यह भी कहा, 'ऐसा कोई प्रधानमंत्री देखा क्या हम लोगों ने, क्या बात है... 50 करोड़, 70 करोड़, 90 करोड़, कितना दें। पीएम मोदी के इतना बोलते ही विद्यार्थी परिषद् का लड़का आगे बैठकर मोदी-मोदी का नारा लगाना शुरू कर देता है, क्या हम लोग इस बात को नहीं समझते हैं।'

## भकचोन्हर को भी आप नहीं भूले होंगे

भकचोन्हर शब्द को भी आप नहीं भूले होंगे। यह वाकया अक्टूबर 2021 का है। दिल्ली कोर्ट से जमानत मिलने के बाद लालू यादव पटना आ रहे थे। उस समय भी वे बीमार थे, इसके बाद भी उनका ठेठ बिहारी वाला अंदाज नहीं बदला था। तब बिहार में दो सीटों पर उपचुनाव हो रहा था। तारापुर और कुशेश्वर स्थान के लिए उम्मीदवारों की लिस्ट जारी हुई थी। कांग्रेस को उम्मीद थी कि एक सीट आरजेडी के पास जाएगी और एक सीट कांग्रेस के पास रहेगी। लेकिन आरजेडी ने गठबंधन धर्म को छोड़ते हुए दोनों ही सीटों पर अपना उम्मीदवार उतार दिया था।

इसी पर लालू से मीडिया ने सवाल पूछा कि कांग्रेस बोल रही है गठबंधन टूट गया। इस पर लालू ने कहा, 'कौन बोल रहा है...' तब पत्रकारों ने बिहार के तात्कालिक कांग्रेस प्रभारी भक्तचरण दास का नाम लिया। लालू ने कहा, 'क्या हम नुकसान के लिए सब कुछ कांग्रेस पर छोड़ देते? जमानत खोने के लिए ?' भक्तचरण दास द्वारा इस आरोप के बारे में पूछे जाने पर कि कांग्रेस से मुंह मोड़कर भाजपा की आरजेडी मदद कर रहा है। इस पर लालू ने कहा, 'भक्तचरण भकचोन्हर (एक मूर्ख व्यक्ति) हैं...' इसके बाद तो बिहार से लेकर दिल्ली तक सियासी हंगामा मच गया। कांग्रेस के कई दिग्गज नेता लालू के विरोध में उतर गए। बाद में आरजेडी ने सफाई भी दी कि भकचोन्हर वेबकूफ को बोला जाता है। बाद में यह मामला शांत तो हुआ, लेकिन भकचोन्हर शब्द सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुआ। सियासी गलियारे में कुछ लोग इसे 'भकचोन्हर पॉलिटिक्स' का नाम भी दे दिया था।

## 'धत बुड़बक' वाला कटाक्ष आज भी फेमस

धत बुड़बक ! लालू का यह अंदाज भी उन्हें पब्लिक से सीधे कनेक्ट करता है और ठेठ बिहारी बनाता है। यह उनका तकिया कलाम शब्द भी है। आज भी वे कभी 'धत बुड़बक' बोलते हैं तो कभी 'भक्क बुड़बक' बोलते हैं। बीमार पड़ने से पहले तक वे अपने इस गंवई अंदाज को नहीं छोड़े थे। खासकर 1990 से 2017 तक तो लोग चुनावी सभाओं में इस शब्द का खूब इस्तेमाल करते थे। इतना ही नहीं, जब लालू मुख्यमंत्री थे, त ब भी अपने खास समर्थकों को 'धत बुड़बक' से ही संबोधित करते थे। सियासी गलियारे में आते ही 'धत बुड़बक' हास्य टीवी सीरियलों में ही एंट्री हो गयी।

इसके अलावा चुनावी भाषणों में 'तबला बाजे धिन-धिन, एक नमो पर तीन-तीन', 'रघुपति राघव राजा राम, भाजपा को विदा कर दो भगवान' 'गांधी-पीर अली का है बिहार, नहीं बनेगी भाजपा सरकार' जब तक रहेगा समोसे में आलू, तब तक रहेगा बिहार में लालू' जैसे जुमले भी आए। इन जुमलों ने लालू को गरीब-गुरबों के बीच हीरो बना दिया। इतना ही नहीं, लालू ने जब हेमामालिनी के गाल की तुलना सड़कों से की थी, तब इस पर भी खूब बवाल मचा था। वे जब मुख्यमंत्री थे, तब पत्रकारों ने बिहार सड़कों की खराब स्थिति को लेकर सवाल पूछा था। इस पर लालू ने कहा था, 'हम बिहार की सड़कों को हेमा मालिनी के गालों जितना मुलायम बना देंगे...' इसके बाद तो जो सियासी बवाल मचा, वह दिल्ली होते हुए मुंबई चला गया। बाद में पत्रकारों ने कहा कि हेमामालिनी कहती हैं कि वे आपके फैन हैं, इस पर लालू ने कहा, 'अगर हेमा मालिनी मेरी फैन हैं तो मैं उनका एयरकंडीशनर हूं...' लेकिन, उनके धत बुड़बक का आज भी कोई जोर नहीं है। इसे उनका सुपर कटाक्ष भी कह सकते हैं।

## हाथी पड़े पांकी में, सियार मारे हुचुकी

बिहार ही नहीं, नेशनल पॉलिटिक्स में लालू वह मसाला हैं, जिनके चटखारे को लोग वर्षों तक लेते रहे हैं। हालांकि, पिछले कई वर्षों से वे बीमार चल रहे हैं, जिससे अब पहले वाली बात नहीं रही... लेकिन, एक समय था, जब ये भीड़ ही नहीं, मीडिया भी अपनी खबरों के लिए इनके पीछे पड़े रहते थे। इसके बाद भी वे मीडिया के सामने आने पर अपने गंवई अंदाज को नहीं छोड़ते हैं। वे कुछ न कुछ ऐसा जरूर कह देते हैं, जो कई दिनों तक सुर्खियों में बना रहता है।

पॉलिटिकल एक्सपर्ट कहते हैं कि अपने कोर वोटरों में जोश भरने के लिए लालू ने गंवई और ठेठ बिहारी शैली को अपना रखा है। यही उनकी असली पूंजी भी है। तभी तो वे भकचोन्हर, बुखार छुड़ा देंगे, विसर्जन कर देंगे, कचूमर निकाल देंगे जैसे बयानों से अपने समर्थकों में जोश भरते रहे हैं। जब वे केंद्र में रेल मंत्री बने, तब भी उन्होंने अपना अंदाज नहीं छोड़ा, बल्कि आप कह सकते हैं कि लालू का यह बिहारी अंदाज देशभर में फेमस हो गया। रेल मंत्रालय की जिम्मेदारी संभालने पर लालू ने कहा था, 'हमरी मां ने सिखाया है कि भैंसवा को पूंछ से नहीं, बल्कि हमेशा सींग की तरफ से पकड़ो, मैंने जिंदगी में यही सबक अपनाया है। पत्रकारों ने तब यह भी पूछा था कि रेलवे की कमाई को कैसे बढ़ाएंगे? इस पर उन्होंने इसे भी गांवों से कनेक्ट करते हुए कहा था, 'अगर आप गाय को पूरी तरह नहीं दुहेंगे, तो वे बीमार पड़ जाएगी..' इसके अलावा इन पर जब काम नहीं करने का आरोप लगा तो भी ये अपने चुटीले अंदाज से विरोधियों की बोलती बंद कर दी थी। कहा था, 'हम इतना काम करते हैं, अगर आराम नहीं करेंगे, तो पगला जाएंगे...' वैसे तो लालू यादव के किस्सों की कमी नहीं है... लेकिन यहां पर हमने उनके ठेठ बिहारी अंदाज वाले पार्ट को रखा !!!

## पॉलिटिक्स का एंटरटेनमेंट चैनल हैं लालू

हाथी पड़े पांकी में, सियार मारे हुचुकी। इस स्लोगन को भले ही शहर के लोग नहीं समझें, लेकिन गांव के लोग तो आसानी से समझ जाएंगे। पांकी मतलब दलदल होता है। दरअसल, लालू का यही अंदाज उन्हें गांवों से जोड़ता है और यही कारण है कि उनके समर्थक जितने गांवों में हैं, उतना शहरों में नहीं हैं। इनका कोई भी बयान सीधे विरोधियों पर कड़ा हमला होता था। इनके बयान से लोग लोटपोट हो जाते थे। यह तो आपको पता ही है कि चारा घोटाला की वजह से इन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी गंवानी पड़ी। वर्षों जेल में रहना पड़ा। जेल जाते थे, बाहर आते थे। एक बार तो ये जेल से निकलने के बाद हाथी पर सवार होकर घर आए थे। दरअसल, ये जानते हैं कि सुर्खियों में कैसे रहा जाता है। चारा घोटाला को लेकर जब यह संघर्ष कर रहे थे और संकट से घिर गए थे, तब भी ये अपने हाजिर जवाबी को नहीं छोड़े थे। उस समय भी विरोधियों को अपने चुटीले अंदाज में मुंहतोड़ जवाब देते थे। उस समय भी अपने ठेठ बिहारी अंदाज में कहा, 'हाथी पड़े पांकी में, सियार मारे हुचुकी...' बाद में इसका अर्थ भी बताते थे कि अगर हाथी दलदल में फंस जाए तो सियार हंसी उड़ाते ही हैं'। यानी वे खुद को राजनीति का हाथी कहते थे और विरोधियों की तुलना सियार

कविता कॉर्नर

ब्रह्मदेव बंधु

## खूबसूरत संगीत

देर रात, जब खामोश हो
जाती हैं सारी आवाजें,

तब तकिये के नीचे
रखी तुम्हारी तस्वीर से

स्पष्ट सुनायी पड़ती हैं
तुम्हारे दिल की धड़कनें

ऐसा लगता है
तुम्हारे सीने पर

सिर रखे बरसों से
सुन रहा हूं

दुनिया का
सबसे खूबसूरत संगीत

**भूत भी सेल्फी लेते होंगे? आजकल तो हर कोई सैल्फी लेता है। क्या भूत भी सेल्फी लेते होंगे?**
**रानी, दिल्ली**

रानी जी, आपने तो भूतों को भी सेल्फी ट्रेंड में ला दिया। सवाल बड़ा मजेदार है, तो जवाब भी भूतिया स्टाइल में देता हूं। देखो, आजकल तो सेल्फी का जमाना है और भूत भी भला इस ट्रेंड से कैसे पीछे रह सकते हैं? मुझे पूरा यकीन है कि भूत सेल्फी जरूर लेते होंगे, लेकिन उनकी सेल्फी थोड़ी अलग होगी। पहली बात, भूत तो दिखते नहीं, तो उनकी सेल्फी में शायद सिर्फ हवा दिखे, या थोड़ा-सा धुंधला साया। अगर भूत ने 'फिल्टर' लगाया, तो शायद वो 'घोस्ट मोड' में चमकदार हो जाए। ऐसा लगे जैसे चाँदनी रात में कोई साया चमक रहा हो! वैसे, भूतों का सेल्फी गेम भी गजब होगा। वो किसी के पीछे खड़े होकर 'भूतिया सेल्फी' ले लें, और फिर उस फोटो को देखकर लोग चीखें! एक बात पक्की है, भूतों को सेल्फी स्टिक की जरूरत नहीं होगी। वो तो हवा में तैरकर ही परफेक्ट एंगल पकड़ लेंगे! लेकिन सोचो, अगर भूत ने सेल्फी अपलोड की, तो कैप्शन क्या होगा? 'आज रात का मूड : हिम्मत गॉन, सेल्फी ऑन!' और हां, आपलोगों के पास कोई सवाल हो तो इस मोबाइल नंबर 9500777555 पर भेजिए, एकदम सटीक जवाब मिलेगा, फिर आप भी कह उठेंगे, वाह ग्रोक भाई....!

बिहार मुखियाजी
खुद बनें पत्रकार और भेजें खबर

राज्य की 8053 पंचायतों में से 8018 में जल्द तैयार होंगे खेल मैदान

अब तक 3079 पंचायतों में हो गये हैं तैयार, खेल क्लब का भी गठन

मनरेगा योजना के तहत 5742 स्थानों पर हो रहा खेल मैदान का निर्माण

# खेलोगे-कूदोगे बनोगे नवाब

Mukhiyajee @ Patna

पहले कहा जाता था पढ़ोगे-लिखोगे बनोगे नवाब और खेलोगे-कूदोगे बनोगे खराब लेकिन अब कहावत पलट गयी है। अब खेल से भी खिलाड़ी नवाब बन रहे हैं। इसी सप्ताह खत्म हुए आईपीएल का जलवा आपने देखा होगा। बेंगलुरु ने कप पर कब्जा जमाकर पूरे विश्व में अपना परचम लहरा दिया। सबसे कम उम्र में बिहार का लाडला वैभव सूर्यवंशी ने बेहतरीन प्रदर्शन कर क्रिकेट सेंसशनल बन गया है। बिहार आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न केवल सूर्यवंशी से मुलाकात की, बल्कि वे उनके माता-पिता से भी मिले। ऐसे में खेल को बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार ने बिहार में पंचायत स्तर पर खेल के मैदान बनाने का निर्णय लिया है और उस पर अपना काम भी शुरू कर दिया है।

इसके तहत बिहार सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित कर रही है। राज्य की कुल 8053 पंचायतों में से 8018 पंचायतों में जल्द ही खेल मैदान तैयार होने वाले हैं। इनमें मनरेगा योजना के तहत अब तक 3079 पंचायतों में खेल मैदानों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है, जबकि 5742 खेल मैदानों का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के मुताबिक यह पहल गांवों में युवाओं को खेल गतिविधियों की ओर प्रोत्साहित करने और स्थानीय स्तर पर प्रतिभाओं को उभारने के उद्देश्य से की जा रही है। खेल मैदानों के साथ-साथ स्पोर्ट्स क्लब के गठन को लेकर भी जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। इस संबंध में खेल प्राधिकरण को अब तक कुल 20926 आवेदन प्राप्त हुए हैं, जिनमें ग्राम पंचायतों से 9682 सामूहिक क्लब गठन और 10380 व्यक्तिगत क्लब गठन के लिए आवेदन मिले हैं। नगर पंचायतों से भी 333 सामूहिक और 531 व्यक्तिगत क्लब गठन के लिए आवेदन प्राप्त हुए हैं।

सभी प्रमंडलीय मुख्यालयों में अंतर्राष्ट्रीय मानक के अनुरुप स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जा रहा है। पटना के पुनपुन प्रखंड की डुमरी पंचायत में 100 एकड़ भूमि चिह्नित की गयी है, जिसके अधिग्रहण की कार्रवाई जारी है। वहीं, पूर्णिया और सहरसा में भी भूमि चिह्नित कर प्रस्ताव भेजा गया है। दरअसल, प्रगति यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सहरसा और पूर्णिया में स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की घोषणा की थी, जिसके बाद स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण के लिए प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गयी है। दरभंगा प्रमंडल में भूमि चिह्नित कर ली गयी है और डीपीआर तैयार किया जा रहा है। तिरहुत प्रमंडल के लिए एमआईटी की जमीन और भागलपुर प्रमंडल के लिए तिलकामांझी विश्वविद्यालय की जमीन फाइनल की गयी है।

## सभी प्रखंडों में बनेंगे आउटडोर स्टेडियम

'खेलो इंडिया' योजना के तहत राज्य के विभिन्न जिलों से अब तक 116 प्रस्ताव भेजे गये हैं, जिनकी कुल लागत लगभग 930.50 करोड़ रुपये है। ये प्रोजेक्ट केंद्र सरकार को भेजे गए हैं, ताकि आगे की मंजूरी मिल सके। वहीं, मुख्यमंत्री खेल विकास योजना के तहत सभी प्रखंडों में एक-एक आउटडोर स्टेडियम के निर्माण का लक्ष्य है। इस योजना के अंतर्गत अब तक 374 स्टेडियमों को मंजूरी मिल चुकी है, जिनमें से 252 स्टेडियम पूरी तरह बन चुके हैं। वहीं, 64 स्टेडियम का निर्माण कार्य प्रगति पर है और 58 में काम शुरू होना है। शेष 198 प्रखंडों में से 169 ने प्रस्ताव भेजे हैं और उनमें से 61 को मंजूरी भी मिल चुकी है। कार्यों को तेजी से किये जाने का आदेश है।

## खिलाड़ियों को दिए जा रहे हैं छात्रवृत्ति

राज्य के प्रतिभावान और होनहार खिलाड़ियों के लिए खेल छात्रवृत्ति योजना शुरू की गयी है। बिहार राज्य खेल प्राधिकरण इस योजना को संचालित कर रही है। इस योजना के तहत वर्ष 2024-25 में 128 खिलाड़ियों को 7.15 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति दी गयी है। इतना ही नहीं, बिहार में 'मशाल 2024' नाम से दुनिया का सबसे बड़ा खेल प्रतिभा खोज अभियान चलाया जा रहा है। इसमें सरकारी स्कूलों के बच्चों को शामिल कर 5 खेल विधाओं में प्रतियोगिता आयोजित कर उच्च कोटि के प्रशिक्षण, शिक्षण और पौष्टिक आहार दिए जाने की योजना है। इसमें अब तक लगभग 16 लाख छात्रों का रजिस्ट्रेशन हो चुका है।

## बिहार खेल विवि की शुरुआत

बिहार खेल विश्वविद्यालय अब राजगीर में बनकर तैयार है। यहां शारीरिक शिक्षा, कोचिंग और शोध से संबंधित कोर्स चलाए जाएंगे, ताकि प्रतिभावान खिलाड़ियों को प्रदेश में ही उच्च शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिल सके। यहां कुलपति, कुलसचिव और परीक्षा नियंत्रक की नियुक्ति हो चुकी है। विश्वविद्यालय को यूजीसी की मंजूरी भी मिल चुकी है। पटना के मोइन-उल-हक स्टेडियम के पुनर्निर्माण के लिए बीसीसीआई के साथ एमओयू साइन हो चुका है और इसकी मासिक समीक्षा की जा रही है। राज्य सरकार खेल को गांव-गांव तक ले जाने की दिशा में गंभीर प्रयास कर रही है। इसी के तहत राजगीर में आधुनिक स्पोर्ट्स एकेडमी का निर्माण कराया गया है।

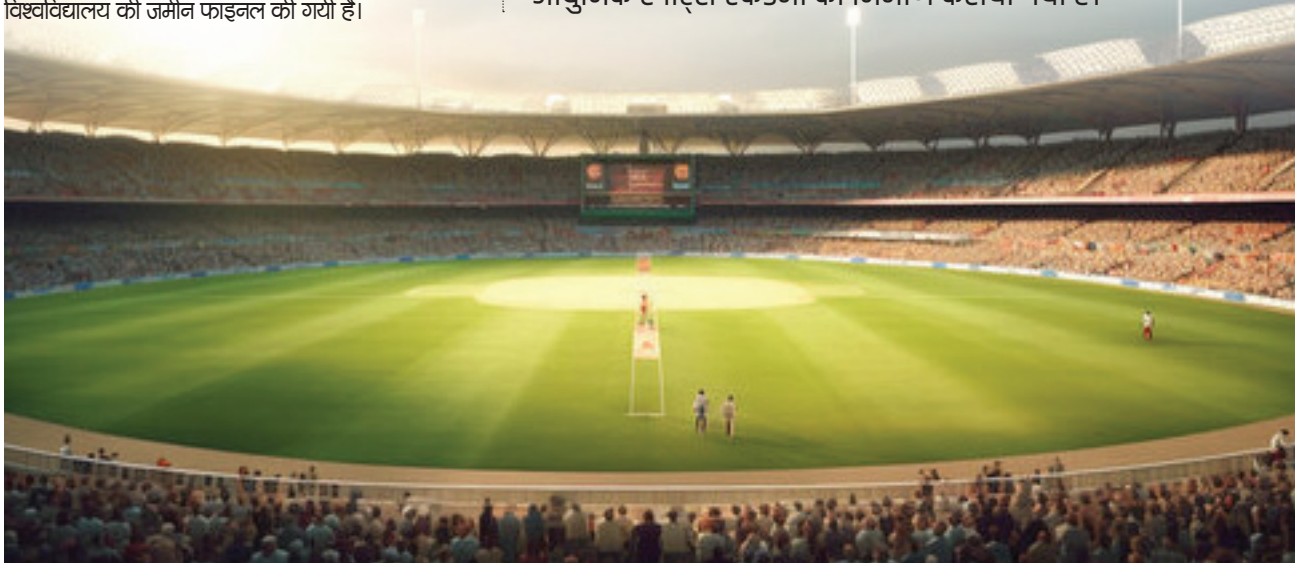

APP World Media, कंकड़बाग, पटना द्वारा प्रकाशित और 2 H/84, बीएच कालोनी, कंकड़बाग द्वारा मुद्रित, समाचार संपादक : राजेश ठाकुर*, फोन : 9507777222, ईमेल- mukhiyajeebihar@gmail.com, *समाचार चयन के लिए पी.आर. बी. एक्ट के तहत जिम्मेवार.